**Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01**
**ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU**
**International open-access peer-reviewed refereed monthly journal**
**https://knowledgeableresearch.com/index.php/1**

# कृत्रिम मेधा और साहित्य सृजन : चुनौतियाँ और संभावनाएँ

प्रा. डॉ. जयराम सूर्यवंशी*
हिंदी विभाग ,श्री संत गाडगे महाराज महाविद्यालय, लोहा,जिला नांदेड (महाराष्ट्र)

**शोध सार**

*हिंदी भाषा भारतीय सभ्यता की ज्ञान-परंपरा और सांस्कृतिक स्मृति की संवाहक रही है, जो डिजिटल युग में विशाल डेटा के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का आधार बनी। AI डेटा और पैटर्न पर आधारित होकर हिंदी में अनुवाद, साहित्यिक विश्लेषण, शिक्षण, शोध, प्रकाशन, संरक्षण और रचनात्मक लेखन को सुलभ एवं प्रभावी बनाती है। 'भाषिणी', AI4Bharat, ChatGPT, Gemini और Perplexity जैसे उपकरण हिंदी के वैश्विक विस्तार में सहायक हैं। हालाँकि AI मानवीय संवेदना, सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं और मौलिकता में सीमित है, इसलिए नैतिकता और मानवीय संपादन आवश्यक है। AI हिंदी के संरक्षण और भविष्य को सुदृढ़ कर सकती है। संतुलित मानव -AI सहयोग से हिंदी भाषा एवं साहित्य को सशक्त बनाकर हिंदी के दीर्घकालिक अस्तित्व और वैश्विक विस्तार को सुनिश्चित कर सकता है।*

**बीज शब्द:** *कृत्रिम बुद्धिमत्ता, तकनीक, हिंदी भाषा, ज्ञान, वैश्विक प्रसार।*

**Received: 02/12/2025**
**Accepted: 17/01/2026**
**Published: 31/01/2026**

***Corresponding Author:**
प्रा. डॉ. जयराम सूर्यवंशी
**Email:** Jayramsuryawanshi847@gmail.com

इक्कीसवीं सदी तकनीकी विकास की सदी है। इस समय देश और दुनिया में तकनीकी क्षेत्र में बड़ी तेजी से नए-नए प्रयोग हो रहे हैं। परिणामस्वरुप कई नए आविष्कार मनुष्य समुदाय के लिए विकसित हुए हैं। कुछ दशक पूर्व कप्यूटर के आगमन के साथ एक तकनीकी क्रांति हुई थी, ठीक उसी तरह आज कृत्रिम मेधा के कारण भी एक बहुत बड़ी तकनीकी क्रांति हुई है। आज विज्ञान, प्रौद्योगिकी, यातायात, संचार, गणित, भौतिकी जैसे कई क्षेत्रों के साथ-साथ लेखन, चिंतन, वैचारीकी के क्षेत्र में भी कृत्रिम मेधा का हस्तक्षेप दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। आज तक मनुष्य ने अपनी बुद्धि, प्रतिभा से कई तरह का नया आविष्कार किया किंतु यही काम आज कृत्रिम बुद्धिमता के माध्यम से हो रहा है। कृत्रिम मेधा कप्यूटर साइंस की एक विकासशील नई शाखा है। इंटरनेट पर अर्जित मनुष्य के सारे ज्ञान को किसी कच्चे माल की तरह इस्तेमाल कर उसमें से आवश्यकता के अनुसार ज्ञान को चुनकर उस ज्ञान को कृत्रिम मेधा तार्किक रूप से पेश करता है। इसे कुछ यूं कहा जा सकता है कि, संग्रहित किए गए तर्क, ज्ञान, योजना, सामान्य बाेध, भाषाई भेद के साथ विभिन्न वस्तुओं को सक्षम ढंग से उपयोग करने की कार्य कुशलता के साथ प्रोग्राम्ड होता है। कृत्रिम मेधा के परिणामस्वरूप आज चंद मिनटों में हम किसी भी क्षेत्र से जुड़ी कुछ भी जानकारी ढूंढ सकते हैं, किसी नए विषय पर कुछ नया लिखना हो, या अन्य कोई समस्या हो उसका समाधान कृत्रिम मेधा से पूछ कर है ढूंढना संभव हुआ है।

सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि कोई भी नई तकनीक एक साथ उपयोगी और हानिकारक होती है। जिस तरह किसी तकनीक के कुछ लाभ मनुष्य समुदाय को मिलते हैं, उसी तरह उसके कुछ भीषण परिणामाें का सामना भी मनुष्य को करना होता है। कृत्रिम मेधा के संदर्भ में भी यही कहा जा रहा है। भले ही मनुष्य को कृत्रिम मेधा के कारण कई चीजें बड़ी सहजता से उपलब्ध हो रही है किंतु इसके परिणामस्वरूप मनुष्य की सोचने की, विचार करने की, गणीतीय क्षमता भी काम हो रही है। ऐसी स्थिति में क्या भारत जैसे कम उन्नत देश की शिक्षा व्यवस्था में कृत्रिम मेधा का उपयोग कैसे हो सकता है ? साहित्य सर्जन के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा के कारण कुछ चुनौतियां दिखाई देती है क्या? या इस नई तकनीक के कारण साहित्य के क्षेत्र में कुछ संभावनाएं दिखाई दे रही है क्या? ऐसे कई प्रश्नों पर चर्चा करना जरूरी है।

कृत्रिम मेधा की संभावनाओं पर चर्चा करते हुए बार-बार यह कहा जा रहा है कि, यह तकनीक हिंदी के विकास को न केवल गति प्रदान करेगी बल्कि उसे नई वैश्विक पहचान दिलाने में भी सहायक होगी। क्योंकि कृत्रिम मेधा जिस गति से कार्य करती है उस गति से अगर

लगातार काम होता गया तो कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को अंजाम मिल सकता है। जिस काम के लिए वर्षों की साधना, दीर्घ अध्यावसाय जरूरी था वह काम आज कृत्रिम मेधा के कारण चंद मिनटाें में संभव हो रहा है। यह निश्चित ही हिंदी के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण बात है। हिंदी आज वैश्विक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है परिणामस्वरुप हिंदी में अनुवाद का कार्य बड़ी मात्रा में होना जरूरी है। ऐसी स्थिति में कृत्रिम मेधा के माध्यम से अनुवाद का कार्य बड़ी तेजी से, निहित समयावधि में संभव हो चुका है। अंग्रेजी, फ्रेंच, लेटिन, संस्कृत जैसी महत्वपूर्ण भाषाओं का साहित्य कृत्रिम मेधा के माध्यम से हिंदी में अनूदित करना सहज संभव हुआ है। इसके अलावा कृत्रिम मेधा को लेकर यह भी कहा जा रहा है कि, इस तकनीक के कारण कुछ नई साहित्यिक विधाएं तैयार होगी। आज तक हमने केवल कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, संस्मरण जैसी विधाओं में साहित्य पढा है। किंतु भविष्य में कई नई साहित्य विधाएं जन्म लेगी जो कृत्रिम मेधा के कारण संभव है।

साहित्य के साथ-साथ सिनेमा के क्षेत्र में भी कृत्रिम मेधा के कारण बड़े बदलाव दिखाई दे रहे हैं। कई पुरानी फिल्मों के गीत, पुरानी फिल्में कृत्रिम मेधा के माध्यम से नई कलात्मक के साथ प्रदर्शित की जा रही है। इससे स्पष्ट होता है कि, इस नई तकनीक का उचित प्रयोग करके साहित्य के क्षेत्र में बहुत बड़ा काम किया जा सकता है। इस संदर्भ में वरिष्ठ आलोचक चंद्रभूषण कहते हैं, "कृत्रिम मेधा इंसानी दिमाग के लिए विराम चिन्ह कतई नहीं साबित होगी, हां इंसान को इसके असर में अपनी समझ का दायरा जरूर बढ़ाना होगा।"1 निश्चित ही चंद्रभूषण जी की मान्यता के अनुसार कृत्रिम मेधा को सकारात्मक दृष्टि से लेते हुए उसकी संभावनाओं पर बल देना चाहिए जिस कारण हिंदी का विकास और उन्नति की संभावनाएं बढ़ेगी।

कृत्रिम मेधा के परिणामस्वरुप जिस तरह साहित्य सृजन में कुछ संभावनाएं दिखाई देती है ठीक उसी तरह यह तकनीक साहित्य सृजन के क्षेत्र के लिए एक चुनौती के रूप में भी सामने आ सकती है। साहित्य सर्जन का क्षेत्र संवेदना, सऱ्हदयता और सहानुभूति से जुड़ा होता है, किंतु कृत्रिम मेधा के पास कोई संवेदना, सहानुभूति नहीं है परिणामस्वरूप साहित्य सृजन के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती हो सकती है। साथ साथ इसका अधिक उपयोग मनुष्य की अपनी नैसर्गिक बौद्धिकता के विनाशक के रूप में सिद्ध हो सकता है। कृत्रिम मेधा के अत्यधिक प्रयोग से मनुष्य अपनी क्षमताओं का संकोच कर सकता है, जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य की अपनी सोचने, बोलने, लिखने की क्षमता पर बड़ा असर होगा। साहित्य सृजन के क्षेत्र में जब कृत्रिम मेधा की बात की जाती है तब और एक मुसीबत दिखाई देती है कि, साहित्य हर तरह की यांत्रिकता, कृत्रिमता से उबरने का एक महत्वपूर्ण साधन है किंतु ऐसे क्षेत्र में कोई तकनीक अगर काम करती है तो स्वाभाविक है साहित्य का उद्देश्य पूरा नहीं होगा। मनुष्य की प्रतिभा, सृजनात्मकता, कल्पकता के द्वारा जिस तरह का मौलिक साहित्य साकार हो सकता है उस तरह का साहित्य कृत्रिम मेधा से संभव नहीं है। इस संदर्भ में वरिष्ठ आलोचक वीरेंद्र यादव कहते हैं, "यह द्वितीय उत्पाद है, न कि जीवित मस्तिष्क की सृजनात्मक कृति।"2 इससे स्पष्ट है कि कृत्रिम मेधा की अपनी मर्यादाएं हैं मनुष्य की नैसर्गिक क्षमता की तरह कृत्रिम मेधा काम नहीं कर सकती है वह तो केवल और केवल इंटरनेट पर उपलब्ध सूचनाओं को तार्किक रूप से अभिव्यक्त करने का काम करती है। कृत्रिम मेधा के माध्यम से अगर साहित्य सृजन होता रहा तो बिना परिश्रम और बिना रचनात्मकता के रातोरात रचनाएं लिखी जाएगी और लोकप्रिय होने की होड़ में साहित्य बड़ी मात्रा में लोगों के सम्मुख रखा जाएगा जिससे कलजयी, वैचारिक चिंतनप्रदान साहित्य की अपेक्षा औसत, बाजरू, लोकप्रिय लेखन तैयार होगा जाे इस तकनीक की सबसे बड़ी मर्यादा या साहित्यसृजन के सम्मुख उपस्थित होने वाली बडी चुनौती है। इस संदर्भ में सुनील कुमार जी का मानना है कि, " भाषा की नकल मशीन कर सकती है पर अनुभव, पीड़ा, स्मृति और करुणा मनुष्य का अपना क्षेत्र है।"3 साहित्य के लिए अनुभव, पीड़ा, स्मृति, संवेदना जरूरी है इसलिए कृत्रिम मेधा से निर्मित साहित्य, साहित्य की आदर्श कसौटी पर नहीं टिकेगा।

भारतीय परिपेक्ष में देखा जाए तो भारतीय समाज की परंपराओं मान्यताओं में और पश्चिमी समाज की परंपराओं मान्यताओं में बड़ा अंतर है। कृत्रिम मेधा आज पश्चिमी दुनिया के प्रभाव में है। परिणामस्वरुप वह भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि से वाकिफ नहीं है। ऐसी स्थिति में साहित्यसृजन के लिए बहुत बड़ी मुसीबत हो सकती है। इस संदर्भ में सुनील कुमार शर्मा का मंतव्य गौरतलब है वे कहते हैं, "एआय व्यवस्थाएं अभी गैर पश्चिमी समाजों की मान्यताओं परंपराओं और सोच को पूरी तरह समझने में सक्षम नहीं है। इसका बड़ा कारण यह है कि ज्यादातर एआय मॉडल उस डेटा पर बने हैं जो पश्चिमी भाषाओं और संस्कृतियों पर आधारित है। इसलिए कई बार एआई स्थानीय प्रतीकों, मुहावरों, आध्यात्मिक धारणाओं, मौखिक परंपराओं और सांस्कृतिक भावों को ठीक से पकड़ नहीं पाता।"4 इस प्रकार से कहा जा सकता है की कृत्रिम मेधा यह तकनीक भले ही मनुष्य को सुविधाजनक लगे, उसकी गति से आज का मनुष्य भले ही बड़ा प्रभावित हो रहा हो, किंतु फिर भी यह तकनीक हमारी कल्पकता,

कलात्मक का संकोच करनेवाली साबित हो सकती है। ऐसी स्थिति में कृत्रिम मेधा का प्रयोग बड़ी सोच समझ के साथ करना जरूरी है इसमें संदेह नहीं।

**संदर्भ सूची :**

1.चंद्रभूषण, वागर्थ, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कला साहित्य परिचर्चा

2.वीरेंद्र यादव, वही

3.सुनील कुमार, वही.

4.वही.

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)